अज्ञेय

Lec-24

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य
पेपर न०-4

डॉ० अनुरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

अज्ञेय को व्यापक अर्थ में आधुनिक कवि के रूप में देखना चाहिए। मुख्यतः वे प्रयोगवादी या प्रयोगशील कवि हैं। उनकी दृष्टि में नयी कविता प्रयोगशील कविता का ही विकास है तो दूसरे अर्थ में प्रगतिवादी या प्रगतिशील कविता का विकास है। नयी कविता में प्रगतिवाद का सामाजिक सरोकार भी है, और प्रयोगशीलता की सहज स्वाभाविक आकांक्षा भी। चमत्कार पूर्ण प्रयोग का आग्रह नयी कविता में कम है या नहीं है। अज्ञेय जब 'नदी के द्वीप' या 'यह दीप अकेला' जैसी कविता लिखते हैं तो वैयक्तिकता और सामाजिकता का द्वंद्व भी दिखाई देता है। जब वे कहते हैं-

'यह द्वीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व-भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।'

तो सामाजिकता को स्वीकार भी करते हैं परंतु आगे याद दिलाते हैं कि सर्जक व्यक्तित्व का अकेलापन अद्वितीयता

Scanned with CamScanner

खोने के लिए नहीं है। यह सामाजिकता और वैयक्तिकता का द्वंद्व अज्ञेय की कविता का बहुत जरूरी संदर्भ है। यह अज्ञेय की कई कविताओं में प्रकट है। अज्ञेय 'साँचे ढले समाज' की जगह 'अच्छी कुंठारहित इकाई' के पक्ष में हैं। अज्ञेय का यह एक मुख्य काव्य अभिप्राय है।

अज्ञेय ने जिस काव्यादर्श को प्रयोगवाद में क्रमशः मूर्त किया उसमें यदि एक द्वंद्व 'रोमांटिक और आधुनिक' के बीच था तो दूसरा 'परंपरा और आधुनिकता' के बीच रोमांटिक अनुभव का जान-बूझकर निषेध अज्ञेय की यहाँ नहीं है। परंतु जैसा पहले संकेत किया गया 'आत्म-चेतना' या खास तरह के 'आत्मबोध से जुड़कर वही आधुनिक बन जाता है। इसी प्रकार अज्ञेय परंपरा को अस्वीकार नहीं करते पर उसे 'पोटली में बांधकर रखा गया पाथेय' भी नहीं मानते। उससे एक तनावपूर्ण संबंध बनाते हुए वे 'आधुनिक अनुभव' तक पहुँचते हैं। यह तनाव ही अज्ञेय को आधुनिक भाव-बोध का कवि बनाता है।

नयी कविता वाले दौर का एक प्रमुख द्वंद्व है- 'व्यक्तित्व की स्वतंत्रता और सामाजिक दायित्व का द्वंद्व'। इस विषय पर न केवल तीव्र विचार-मंथन दिखाई देता है, बल्कि अज्ञेय की 'नदी के द्वीप', 'यह दीप

अकेला' कविताएँ भी पाठक को प्रभावित करती हैं। इनमें कवि सामाजिक प्रवाह में घुल-मिल जाना चाहता है। पर 'सृजनात्मकता की अद्वितीयता और विशिष्टता बचाकर'-

'किंतु हम हैं द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा
हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।

किंतु हम बहते नहीं हैं
क्योंकि बहना रेत होना है।' (नदी के द्वीप)

अज्ञेय 'नदी के द्वीप' कविता है जो स्नेह भरा, गर्व-भरा है सर्जनात्मक अद्वितीयता अर्थात् वैयक्तिकता का प्रतीक है। अज्ञेय उसे पंक्ति को अर्थात सामाजिकता को दे देना चाहते हैं। पर उसके अकेलेपन को जीवंत, स्वाधीन रखकर। इसी द्वीप का द्वीपत्व महत्त्वपूर्ण है। वह धारा में है, धारा से ही बना है, पर जब बन गया है, तो धारा में विलीन हो जाना उसे स्वीकार नहीं। क्योंकि वह जाना रेत हो जाना है और रेत की तरह धारा में मिलने की सार्थकता ही क्या। इसलिए धारा से होकर भी उसकी अद्वितीयता बनी रहे, यही कवि को भी स्वीकार है।

Scanned with CamScanner

अज्ञेय को पढ़ते वक्त यह बराबर अनुभव होता है कि अज्ञेय विचारों मूल्यों के कवि हैं। पर वे औसत मूल्य को भी अपने निजी व्यक्तित्व के स्पर्श से नया मूल्य बना देते हैं। नयी कविता आंदोलन के बाद भी वे समकालीन परिदृश्य पर अपनी निजी पहचान बनाए रख सके। वह अपने आप में महत्वपूर्ण है। प्रेम, विषाद, मृत्यु का उनका अपना अनुभव कविता में नया विचार बनता है। उनका मूल्य बोध उनका काव्य मुहावरा बन जाता है। कभी उनका कथन इतना सादा है -

'मैं आस्था हूँ
तो मैं निरंतर उठते रहने की शक्ति हूँ
मैं व्यथा हूँ
तो मैं मुक्ति का श्वास हूँ।'

अज्ञेय का आत्मबोध आत्मलीनता तक सीमित नहीं है। अज्ञेय का आत्म-बोध व्यक्ति-सत्य और व्यापक सत्य के बीच एक नया संबंध बनाता है। अज्ञेय जीवन से प्रेम करते हैं पर इस प्रेम को निस्संग विस्मय का-सा भाव बताते हैं। जीवन सुंदर है आश्चर्यजनक रूप से सुंदर है पर जरूरी है कि जीवन को सीधे देखें कांच में से न देखें। कांच में से देखेंगे तो रूपों में

Scanned with CamScanner

भटक जाएंगें। जीवन तक पहुँचेंगे ही नहीं। 'सोन-मछली' कविता यही कहती है। प्रतीक नया नहीं है पर अर्थ नया है। संकेत के लिए बिम्ब नया है :-

'हम निहारते रूप
काँच के पीछे हाँप रही मछली
रूप - तृषा भी
(और काँच के पीछे)
है जिजीविषा।'

यहाँ मछली का प्रतीक सत्य के अन्वेषण में सहायक है। अज्ञेय की जीवन-दृष्टि के प्रमुख संदर्भ है - व्यक्ति स्वातंत्र्य और व्यक्तित्व का विसर्जन या अहं का विलयन या आत्मदान।

आधुनिकता समय-सापेक्ष संज्ञा है और वह मूल्य-बोधक भी है। समसामयिकता से एक सीमित अर्थ का बोध होता है। यहाँ मूल्य का आग्रह नहीं है। आधुनिकता मूल्य-बोध है और उसका संदर्भ व्यापक है। इसलिए इलियट जैसे विचारक परंपरा को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते। उससे प्रश्न करती है। प्रश्नशीलता आधुनिक भाव-बोध की अभिव्यक्ति की खास युक्ति है। वह रीति या रूढ़ि के विरुद्ध है। आधुनिक में विद्रोह और विक्षोभ का विशेष अनुभव भी शामिल है। निर्वैयक्तिकता उसका खास लक्षण है। अज्ञेय जैसे आधुनिक बोध

के कवि के लिये प्रेम सामान्य प्रेम नहीं, दुःख सामान्य दुःख नहीं, मुक्ति या मृत्यु सामान्य मुक्ति या मृत्यु नहीं। प्रकृति भी वही नहीं, जो दूसरों के लिए ~~नहीं~~ हैं। अज्ञेय को श्वेत चाँदनी 'वंचना' लगती है, आकाश का गहन विस्तार 'झूठ' लगता है। पूर्णिमा की शांति 'निस्सार' लगती है। आधुनिकता का बोध कभी आघात पैदा करने वाला है।